SANATANODAYA सनातनोदय
ISSN (O) : 3048-9318
Vol. 1, No. 1, Year 2024
Available Online : https://sanatanodaya.com/

धर्म, युद्ध और शांति: गीता के सिद्धांतों का आधुनिक विश्लेषण

डॉ० माला कुमारी गुप्ता

सहायक प्रोफ़ेसर, संस्कृत विभाग, वीमेंस कॉलेज कलकत्ता

संक्षिप्तसार

श्रीमद्भगवतगीता, भारतीय दर्शन का एक अमूल्य ग्रंथ जिसमें समस्त संसार और मानव जगत के कल्याण का सारतत्त्व निहित है,जो जीवन और संघर्ष के विभिन्न आयामों पर गहन दृष्टिकोण प्रदान करती है। महाभारत के युद्ध के मैदान में अर्जुन की नैतिक दुविधा और कृष्ण द्वारा दिए गए उपदेश केवल युद्ध की प्रासंगिकता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि मानव इतिहास की सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक और राजनितिक वार्ता भी है जो आधुनिक जीवन के हर पहलू को छूते हैं। यह ग्रन्थ जीवन की समस्त बाधाओं, पीड़ाओं, दुःखों, समस्याओं को दूर कर मोक्ष की ओर अग्रसर करने वाला एवं मानव को निष्काम भाव से कर्त्तव्य की प्रेरणा देने वाला धार्मिक एवं मोक्षप्रद ग्रन्थ है। गीता का मूल संदेश 'कर्मयोग' और 'धर्म' पर आधारित है। धर्म का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठानों से नहीं, बल्कि अपने कर्तव्यों और नैतिकता के पालन से है। अर्जुन को उपदेश देते समय, कृष्ण बताते हैं कि धर्मयुद्ध केवल भौतिक युद्ध नहीं है, बल्कि अन्याय, अधर्म और अज्ञानता के खिलाफ संघर्ष है। आधुनिक संदर्भ में, यह संघर्ष असमानता, भ्रष्टाचार, और सामाजिक अन्याय के खिलाफ हो सकता है।गीता यह सिखाती है कि शांति का मार्ग केवल हिंसा से बचने में नहीं, बल्कि सत्य और न्याय के लिए संघर्ष में है। 'अहिंसा परमो धर्मः' के साथ-साथ 'धर्म हेतु युद्ध' का संतुलन आधुनिक समाज के लिए एक शिक्षाप्रद संदेश है। आज की दुनिया में, जहां आतंकवाद, पर्यावरणीय संकट, और सामाजिक विषमताएं बढ़ रही हैं, गीता के सिद्धांत हमें न केवल नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन देते हैं, बल्कि संघर्ष और समाधान के बीच संतुलन बनाना सिखाते हैं।अतः, गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन का दर्शन है, जो आधुनिक समाज को नैतिकता, कर्तव्य, और शांति के महत्व को समझाने में सहायक है।

मूल शब्द : धर्म, निष्काम कर्म, युद्धनीति, शांति, आध्यात्मिक, तनावग्रस्त, विश्व शांति।

भूमिका

श्रीमदभगवद्गीता महाभारत का एक अंश है जिसे भारतीय संस्कृति और दर्शन का एक अनमोल ग्रंथ भी कहा जाता है। गीता के विषय में स्वयं वेदव्यास कहते है -

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।

या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद विनिः श्रीता:।। १

श्रीमदभगवद्गीता जीवन की जटिलताओं को समझने के लिए गहन अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करती है। विभिन्न विचार पद्धतियों को एक समन्वयात्मक सूत्र में निबद्ध कर उनमें लोक कल्याण की भावना का संचार करने वाली गीता महाभारत के भीष्म पर्व का एक अंश है। महाभारत के युद्धक्षेत्र में, अर्जुन और श्रीकृष्ण के संवाद के रूप में रचित यह गीता जो एक दार्शनिक कृति है, धर्म, युद्ध और शांति के गहन सिद्धांतों को प्रस्तुत करती है। गीता न केवल हिन्दुओं का धार्मिक और दार्शनिक ग्रन्थ है बल्कि विश्व की सबसे प्राचीन जीवित संस्कृति और भारत की महान धार्मिक सभ्यता के साहित्यिक प्रमाण के रूप में भी इसे देखा जा सकता है। यह ग्रन्थ मानव अस्तित्व, कर्तव्य, नैतिकता और आध्यात्मिक ज्ञान के मार्ग के सार को गहराई से समझाती है। इसकी शिक्षाएँ समय से परे हैं और हमारे आधुनिक जीवन में प्रासंगिक बनी हुई हैं, जो मूल्यवान सबक और सिद्धांत प्रदान करती हैं साथ ही हमें अधिक पूर्ण और उद्देश्यपूर्ण अस्तित्व की ओर ले जा सकती हैं।

गीता का धर्म सिद्धांत

जब भी किसी विषय की प्रासंगिकता का निरूपण किया जाता है, तो उसका सीधा अर्थ होता है कि यह विषय वर्तमान काल के समस्याओं के समाधान में कहाँ तक उपयोगी है? देश की वर्तमान समस्याओं पर यदि प्रकाश डालते है तो हम देखते है कि हमारी कानून व्यवस्था दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। पुलिस विभाग, शिक्षा विभाग, राजस्व विभाग, लोक निर्माण, जनकल्याण सब जगह व्यवस्था चरमरा सी गई है।

धर्म भारतीय संस्कृति और दर्शन का मूल है। इसे न केवल धार्मिक आस्था तक सीमित किया गया है, बल्कि इसे मानव जीवन के कर्तव्यों और नैतिकता के सभी पहलुओं को आधार बताया गया है। गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को स्वधर्म का पालन करने की शिक्षा देते हैं। यह सिद्धांत आज के युग में भी प्रासंगिक है I प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों को समझने की आवश्यकता है। गीता की एक मुख्य शिक्षा 'धर्म' या कर्तव्य की अवधारणा के इर्द-गिर्द घूमती है। युद्ध के मैदान में नैतिक दुविधा का सामना कर रहे अर्जुन को कृष्ण ने योद्धा के रूप में अपने धर्मी कर्तव्य को पूरा करने की सलाह दी। यह समाज में हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों और भूमिकाओं को समझने और अपनाने के महत्व पर प्रकाश डालता है। गीता हमें सिखाती है कि ईमानदारी और समर्पण के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करके, हम अपने जीवन में उद्देश्य और पूर्णता की भावना पैदा कर सकते हैं।

गीता का मुख्य संदेश 'निष्काम कर्म' है, जिसमें व्यक्ति अपने कार्य का फल सोचे बिना उसे पूरी निष्ठा से करता है। यह सिद्धांत आधुनिक समाज में तनाव और अपेक्षाओं से मुक्ति पाने का मार्ग दिखाता है। प्रत्येक मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह में आकंठ डूबकर अपने स्वकर्तव्य को भूल चूका है । राष्ट्र की तरुणाई को आलस्य का घुन लग चूका है। अतएव किंकर्तव्यविमूढ़ करोड़ों युवा भारतियों में जोश भरना होगा। पृथा पुत्र अर्जुन की पौरुष का स्मरण करना होगा जिससे युवावर्ग आलस्य और अकर्मण्यता को त्याग कर नींद से जाग उठे।

स्वधर्म का ज्ञान और उसका पालन ही वह मूलमंत्र है I कर्तव्य पथ से विमुख और निस्तेज अर्जुन को इसी स्वधर्म का पाठ पढ़ाते हुए श्री कृष्ण कहते है –

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।। २

परहित भावना से किया गया कर्म चाहे वह राजा हो या रंक, जल्लाद हो या सफाई कर्मचारी सभी का कार्य स्तुति तुल्य है। ऐसे स्वधर्म का पालन समस्त कामनाओं और भोगों का पूर्णतः त्यागकर निःस्वार्थ भाव् से अहंकार मुक्त होकर भगवान को समर्पित करना चाहिये। वैश्विक स्तर पर स्वधर्म का अर्थ उन कर्तव्यों से होता है जिसमें 'बसुधैव कुटुम्बकम' और 'विश्ववारा संस्कृति' का सम्बाहक होता है। आज हमारे समक्ष विद्धमान समस्त संकटों और चुनौतियों का समाधान गीता के चिंतन, मनन और अनुपालन में है।

भगवद्गीता और युद्ध की नैतिकता

न्यायपूर्ण युद्ध के लिए गीता के श्लोकों में निहित युद्धनीति जो वैश्विक स्तर पर अनुप्रेरणा का कार्य करता है, इससे यह शिक्षा मिलती है कि युद्ध के दौरान योद्धाओं को कैसे आचरण करना चाहिए। महाभारत में दर्शाया गया युद्ध, जिसका गीता भी एक हिस्सा है, दो परिवारों पांडवों और कौरवों चचेरे भाईयों के बीच की लड़ाई है, जब दोनों हस्तिनापुर के राज्य पर नियंत्रण पाने की कोशिश करते हैं। कई सालों की दुश्मनी के बाद, पड़ोसी राज्य के शासक कृष्ण, चचेरे भाइयों के बीच की लड़ाई के समाधान निकालने की पेशकश करते हैं। जब बातचीत विफल हो जाती है और चचेरे भाइयों के बीच युद्ध अपरिहार्य हो जाता है तो कृष्ण युद्ध के दौरान अर्जुन के सारथी बनने के लिए सहमत होते हैं। इस पृष्ठभूमि के खिलाफ, गीता कृष्ण और अर्जुन के बीच एक वार्तालाप का रूप लेती है, जिसमें अर्जुन कबूल करता है कि उसका शरीर 'अपने लोगों' के साथ युद्ध में जाने के विचार से 'काँपता' है, तो कृष्ण युद्ध में उसका मार्गदर्शन करने के लिए अर्जुन को सलाह देते हैं।

कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि सबसे पहले व्यक्ति को अपने धर्म - कर्तव्य या नैतिकता को समझना चाहिए। अगर जरूरत पड़े तो 'धर्म के लिए' एक योद्धा होने के नाते, धर्मयुद्ध में भाग लेने से बड़ा कोई उद्देश्य नहीं हो सकता। ऐसे प्रयास के महत्व को रेखांकित करते हुए कृष्ण अर्जुन से कहते हैं - हे कुंती पुत्र जिन जिन महान योद्धाओं ने तुम्हारे नाम और यश को सम्मान दिया हैं, वे सब सोचेंगे कि तुमने मृत्यु के डर से युद्धभूमि छोड़ दी अतःएव सुख -दुःख, लाभ -हानि,विजय -पराजय का विचार किये बिना निष्काम भाव से युद्ध करो। यदि युद्ध करते हुए तुम मारे जाओगे तो स्वर्ग प्राप्त करोगे, और अगर तुम विजय हुए तो पृथ्वी पर साम्राज्य करोगे, अतः दृढ निश्चय होकर युद्ध करो -

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महिं।

तस्माद‌ुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।। ३

जटिल बौद्धिक तर्कों, धार्मिक औचित्य और नैतिक विचारों पर चर्चा करते हुए कृष्ण अर्जुन को यह समझाते हैं कि उसके विचार के विपरीत, युद्ध से दूर जाना ही वास्तविक 'हानिकारक' है, क्योंकि जब शत्रु से ऐसा करने के लिए कहा जाता है तो वह उससे युद्ध न करके अपने धर्म का त्याग कर रहा होता है। धर्मपूर्ण युद्ध लड़ना उसका धर्म है, भले ही इसके परिणाम दर्दनाक होंI

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।

ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।। ४

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों को समझने की आवश्यकता है। भगवदगीता की एक मुख्य शिक्षा 'धर्म' या कर्तव्य की अवधारणा के इर्द-गिर्द घूमती है। युद्ध के मैदान में नैतिक दुविधा का सामना कर रहे अर्जुन को कृष्ण ने योद्धा के रूप में अपने धर्मी कर्तव्य को पूरा करने की सलाह दी। यह समाज में हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों और भूमिकाओं को समझने और अपनाने के महत्व पर प्रकाश डालता है। गीता हमें सिखाती है कि ईमानदारी और समर्पण के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करके, हम अधिक से अधिक अपने जीवन में उद्देश्य और पूर्णता की भावना पैदा करते हैं। जब महारथी अर्जुन अधर्म के विरुद्ध युद्ध में भावनाओं में बहकर निर्बल हो जाता है तो श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि अपने आप खुले हुए स्वर्ग के द्वार रूपी युद्ध को भाग्यशाली लोग ही प्राप्त करते हैं -

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतं।

सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमिदृशं।। ५

इस श्लोक के माध्यम से उस समय अर्जुन के समक्ष आई परस्थितियों पर प्रकाश डाला गया हैं। आज के युग में भी हमारे सामने अनेक सामाजिक बुराइयों सुरसा कि भाती मुँह वाये खड़ी हैं जिसका उन्मूलन कर एक सुगठित समाज कि स्थापना करना ही सच्ची राष्ट्र सेवा हैं।

गीता के पारंपरिक व्याख्याकारों ने यह दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है कि यह ग्रंथ न्यायपूर्ण युद्ध पर एक चिंतन है। गीता अपने पाठक को युद्ध में जाने के लिए नैतिक और नैतिक कारण प्रदान करती है I गीता के धर्मयुद्ध में जिस धर्म की बात कही गई है, वह युद्ध को प्रेरित करने वाले तर्क की नैतिक गुणवत्ता से जुड़ा है और इसका युद्ध के मैदान में योद्धा के आचरण की नैतिक गुणवत्ता से कोई लेना-देना नहीं है। यह दृष्टिकोण तब और भी पुख्ता हो जाता है जब हम गीता को महाभारत के व्यापक संदर्भ में रखते हैं, जहाँ पांडव, कृष्ण के कहने पर कौरवों को हराने के लिए अनुचित साधनों का उपयोग करते हैं, जिससे यह लोकप्रिय धारणा बनती है कि कृष्ण मैकियावेलियन यथार्थवाद या परिणामवादी प्रस्ताव को वैध ठहराते हैं I

गीता और महाभारत दोनों का ऐसा पाठ पांडवों और कृष्ण के आचरण के बीच एक वियोग की वकालत करता है, जो कई बार अन्यायपूर्ण या अपमानजनक साधनों पर निर्भर करता है, और उनके समग्र चरित्र, जिसे

महाकाव्य 'अच्छा' और 'न्यायपूर्ण' के रूप में चित्रित करता है। युद्ध के प्रतिभागियों के चरित्र को युद्ध के मैदान पर उनके आचरण से अलग करना और युद्ध के कारणों को युद्ध के कार्यों से अलग करना न्यायपूर्ण या धार्मिक युद्ध के दौरान भी अन्यायपूर्ण युद्ध की संभावना को सुनिश्चित करता हैI और इसके विपरीत, एक विचार जो महाभारत या गीता तक ही सीमित नहीं है, बल्कि न्यायपूर्ण युद्ध सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण पहलू भी है। इस प्रकार युद्ध के दौरान किए गए कार्यों को युद्ध के कारण से अलग करना हमें उन्हें अलग-अलग आंकने के लिए अलग-अलग मानदंडों का उपयोग करने में मदद करता है।

समकालीन न्यायपूर्ण युद्ध सिद्धांत की उत्पत्ति विभिन्न प्राचीन और मध्यकालीन विचारकों के विचारों और लेखन के साथ-साथ धार्मिक परंपराओं से हुई है, जिन्होंने युद्धों की नैतिकता और वैधता से संबंधित प्रश्नों पर गंभीरता से विचार किया था। न्यायपूर्ण युद्ध संबंधी दृष्टिकोण केवल भौतिक युद्ध तक सीमित नहीं है। यह आंतरिक संघर्षों और जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिए भी शिक्षाएं प्रदान करता है।

शांति का सिद्धांत

गीता में शांति को आंतरिक और बाहरी दोनों रूपों में समझाया गया है। एक योद्धा नैतिकता के लिए केंद्रीय संयम का विचार कर युद्ध के मैदान में तभी प्रकट किया जा सकता है जब उनके युद्धकालीन कार्यों में नुकसान को कम करने के लिए जुनून और क्रोध की भावनाओं को त्यागने की पूर्ण प्रतिबद्धता होI कृष्ण के अनुसार एक सच्चे योद्धा के लिए यह महत्वाकांक्षा आवश्यक है। गीता के नैतिक दृष्टिकोण को सूचित करने वाली संयम की यह अक्सर अनदेखी की गई भावना एक उत्कृष्ट प्रवेश बिंदु के रूप में काम कर सकती है जिसके माध्यम से भारतीय परंपराओं में उल्लिखित संयम के रूपों, जैसे 'अहिंसा' युद्ध के दौरान पीड़ा को कम कर मूल रूप से हिंदू धर्म सहित प्राचीन धार्मिक धर्मों द्वारा प्रचारित, एक प्रमुख गुण के रूप में जिसे किसी को भी 'अच्छा जीवन' जीने के लिए अपनाना चाहिएIअहिंसा का विचार वर्षों से एक धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक और मानवीय आदर्श के रूप में विकसित हुआ है जो दुनिया के हिंसक तरीकों के सामने शांति की वकालत करता है।

अहिंसा के सभी अनुयायियों में,महात्मा गांधी के विचार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैI एक ओर, बौद्ध, जैन और हिंदू शिक्षाओं में उल्लिखित अहिंसा की पारंपरिक व्याख्याएं अहिंसा को हिंसा की अनुपस्थिति या निषेध के रूप में परिभाषित करती हैं, इसके विपरीत, गांधीवादी ढांचा बताता है कि अहिंसा का वास्तविक महत्व और उपयोगिता किसी को अपरिहार्य हिंसा का सामना करने से पीछे नहीं हटना बल्कि सक्रिय रूप से इसमें शामिल होना चाहिए ताकि इसके हानिकारक परिणाम कम से कम हों। अंततः, गांधीजी ने संयम के साथ हिंसा के बीच खुद को रखने के लिए साहस का आह्वान किया, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हमारा आचरण जुनून और भावनाओं, विशेष रूप से क्रोध से प्रेरित न होI अहिंसा की यह समझ एक उपयोगी प्रारंभिक बिंदु हो सकती है जिसके माध्यम से हिंदू धार्मिक ग्रंथों, जैसे गीता और महाभारत में उल्लिखित युद्ध

में संयम की दृष्टिकोण आधुनिक अवधारणाओं के बीच अंतर्संबंध को और अधिक विस्तृत किया जा सकता है।

आध्यात्मिक शांति:

श्रीकृष्ण आत्मा की अमरता और कर्मयोग के माध्यम से आंतरिक शांति प्राप्त करने की शिक्षा देते हैं। आज के व्यस्त जीवन में, गीता का यह संदेश आत्मनिरीक्षण और ध्यान के महत्व को रेखांकित करता है।भगवदगीता हमारे कर्मों के फलों से विरक्ति की आवश्यकता पर जोर देती है। यह हमें सिखाती है कि सच्चा आध्यात्मिक विकास परिणामों से आसक्ति के बिना अपने कर्तव्यों का पालन करने से आता है। समभाव विकसित करके और विशिष्ट परिणामों की इच्छा को त्यागकर, हम जीवन के उतार-चढ़ाव को अनुग्रह और आंतरिक शांति के साथ पार कर सकते हैं। यह हमारी तेज़-रफ़्तार और परिणाम-संचालित दुनिया में बहुत प्रासंगिक है, जो हमें अंतिम परिणामों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करने की याद दिलाती है।

आधुनिक संदर्भ में गीता के सिद्धांतों का महत्व

आज के दौर में, जब लोग तनाव, अवसाद और आत्म-संदेह से ग्रस्त हैं, गीता का निष्काम कर्म और आत्मा की अमरता का सिद्धांत मन की शांति प्रदान कर सकता है।गीता के सिद्धांत नेतृत्व के नैतिक मूल्यों को स्थापित करते हैं।

कृष्ण युद्ध में लड़ने के लिए अर्जुन के 'संकल्प' को अपना सबसे बड़ा उद्देश्य बताते हैं, वे कहते हैं कि अर्जुन को केवल तभी 'युद्ध में शामिल होना चाहिए' जब वह मन की एक विशिष्ट स्थिति प्राप्त कर ले - 'सुख और दुख', 'लाभ और हानि', 'जीत और हार' के प्रति एक संतुलित स्वभाव जो युद्ध का आह्वान है, और युद्ध के इस आह्वान का पालन एक विशेष स्वभाव और आचार संहिता को निर्धारित करके करना चाहिए।

समकालीन समाज में आचार संहिता का उलंघन और नैतिक मूल्यों का पतन एक गंभीर समस्या बन चूका है। भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी,और स्वार्थपरता हर क्षेत्र में ब्याप्त है। गीता में श्रीकृष्ण ने निष्काम कर्मयोग का सन्देश दिया है। उनका कहना है की व्यक्ति को बिना परिणाम के चिंता किये हुए अपने कर्मों को ईमानदारी और निष्ठां से पालन करना चाहिए-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोस्त्वकर्मणि ॥ ६

अर्थात हे अर्जुन! तेरा कर्म में ही अधिकार है उसके फल में नहीं। इस श्लोक को सम्पूर्ण वेदांत का सार समझना चाहिए। मनुष्य को पहले कर्म पर बिचार करना चाहिए की वह अकर्म तो नहीं है। भगवतगीता में सुख -दुःख का उदय अंतर्ध्यान सर्दी और गर्मी कि ऋतुओं के सामान हैं। इनसे विचलित हुए बिना इसे सरलता से सहन करना चाहिए।, क्योंकि सुख दुःख में समभाव रखने वाला पुरुष ही मुक्ति के योग्य होता हैं –

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्ण सुखदुःखदाः।

आगमपायिनोअनिन्यस्तांस्तिक्षीस्व भारत।। ७

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।

समदुःखसुखं धीरं सोमृतत्वाय कल्पते।। ८

उपसंहार

गीता के सिद्धांत हमें सिखाते हैं कि जीवन का उद्देश्य केवल सांसारिक सुख या विजय प्राप्त करना नहीं है, बल्कि आत्मा की शांति और धर्म का पालन करना है। धर्म, युद्ध और शांति के प्रति गीता का दृष्टिकोण न केवल भारत, बल्कि पूरी मानवता के लिए एक अनमोल धरोहर है। आज के संघर्षमय और अशांत विश्व में गीता के संदेश को अपनाकर हम एक संतुलित और शांतिपूर्ण समाज की स्थापना कर सकते हैI आज वर्तमान जीवन में मनुष्य को अपने भीतर और बाहर दोनों को संतुलन करने की जरुरत है। श्रीमद्भागवत गीता हमें शिक्षा देती है की मनुष्य को अपने अहंकार, छल- कपट,लोभ, स्वार्थ, और कटुता को त्याग कर एक नवीन समाज की स्थापना करनी चाहिए, जिससे उसका कर्म समस्त मानव जाति के लिए समृद्धि ला पायेगा साथ ही आज की वैश्विक समस्याएं जैसे भुखमरी, सांप्रदायिक दंगे, युद्ध, देशों के बीच घातक अस्त्रों की होड़, नरसंहार, पारिवारिक झगड़े आदि समस्यायों से दूर होकर एक नए समाज की नीव रखने में समर्थ होगाI भगवद गीता अपने गहरे धार्मिक निहितार्थों के बावजूद, एक वैश्विक संवेदनशीलता को आकर्षित करने में सफल रही हैI एनी बेसेंट, अरबिंदो घोष, बाल गंगाधर तिलक और मोहनदास गांधी जैसे आधुनिक भारतीय राजनीतिक नेताओं को प्रभावित करने के अलावा, इस ग्रंथ के प्रशंसक पश्चिम में भी हैं और इसमें राल्फ वाल्डो इमर्सन, हेनरी डेविड थोरो, विलियम ब्लेक, टीएस इलियट और अधिक समकालीन फिलिप ग्लास जैसे व्यक्ति शामिल हैं। गीता आज वास्तव में एक वैश्विक ग्रंथ है और इसका संदेश न केवल हिंदू धर्म के अनुयायियों के लिए बल्कि व्यापक मानवता के लिए प्रासंगिक है।९ अतः धर्म, युद्ध और शांति के संदर्भ में गीता के सिद्धांत आज के युग में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने महाभारत के समय थे।

ग्रन्थ सूची

१)कुमार, डॉ धर्मेंद्र, श्रीमद्भगवद्गीता(भाष्य सहित), सचिव दिल्ली संस्कृत अकादमी, राष्ट्रिय राजधानी क्षेत्र,नई दिल्ली I

२) श्रीमद्भगवद्गीता ३/३५ गीताप्रेस गोरखपुर I

३) जगदानंद, स्वामी,श्रीमद्भगवद्गीता(२/३७), स्वामी नित्यमुक्तानन्द,जनवरी २०१९, रामकृष्ण मठ,बाघबाजार,कोलकाता ०३

ISSN (O) : 3048-9318
Vol. 1, No. 1, Year 2024
Available Online : https://sanatanodaya.com/

४)वही, २/३८

५)श्रीमद्भगवद्गीता २ /३२ गीताप्रेस गोरखपुर I

६) वही २/४७

७)वही,२/१४

८)वही २/१५

९)धर्मयुद्ध और शांति: 'गीता के सिद्धांतों का आधुनिक विश्लेषण'I